International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 09-01-2024, Accepted: 30-01-2024, Published: 24-02-2024
Volume 6, Issue 1, 2024, Page No. 4-6

कबीर की काव्य रचनाओं में सत्य की महिमाः एक अध्ययन

सुमन रानी[1], मंजू[2]
[1] हिंदी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत
[2] प्राध्यापक और अनुसंधान पर्यवेक्षक, हिंदी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश
समाज सुधारक के रूप में कबीर साहब का नाम हिन्दी साहित्य में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। कबीर साहब तत्कालीन समय में समाज सुधारक पहले थे, तथा कवि बाद में थे। उन्होने समाज में व्याप्त रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों पर व्यंग्य रूप में करारा प्रहार किया है। उन्होंने धर्म को सत्य से जोड़कर समाज में प्रचलित रूढ़िवादी परंपरा का भरपूर खंडन किया है। कबीर ने मानव को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति बताया है और कहा है कि इसमें कोई भी कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं होता है। एक महान समाज सुधारक के रूप में उन्होंने समाज में प्रचलित अनेक कुरीतियों बुराइयों व अधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया है। कबीर ने समाज को एक अद्भुत संदेश दिया है समाज को उनके संदेशों का अनुसरण करना चाहिए।

मूल शब्दः सत्य, परमेश्वर, ईश्वर, समाज, जीवन मूल्य, संसार, आदि

भारत में हिंदी साहित्य का इतिहास सदियों पुराना है। हिंदी साहित्य का दूसरा चरण भक्ति काल के नाम से भी जाना जाता है। भक्ति काल को स्वर्ण युग भी कहा जाता है भक्ति काल को सवर्णयुग के नाम से भी जाना जाता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति काल महत्वपूर्ण स्थान रखता है, आदिकाल के बाद आए इस युग को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है। इसकी समय अवधि १३७५ विक्रमी संवत से १७०० विक्रमी संवत तक की मानी जाती है। यह हिंदी साहित्य का श्रेष्ठ योग है। इसको जॉर्ज ग्रियसरन ने स्वर्ण काल, श्यामसुंदर दास ने स्वर्ण युग, आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्ति काल, एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक जागरण कल कहा है। संपूर्ण साहित्य के श्रेष्ठ कवि और उत्तम रचनाएं इसी में प्राप्त होती है। प्रस्तुत शोध का संबंध संत काव्यधारा के प्रमुख, महान कवि और समाज सुधारक कबीर दास से है। कबीर का जन्म सन १३९८ में काशी में लहरतारा तालाब में उत्पन्न कमल के पुष्प के ऊपर बालक के रूप में हुआ ये जाति से जुलाहा थे और काशी में रहते थे। कुछ लोगों का कहना है कि वह जन्म से मुसलमान थे। इनके गुरू का नाम रामानन्द था और युवावस्था में स्वामी रामानंद के प्रभाव से उन्हें हिंदू धर्म की बातें मालूम हुई। कबीर ने सन १५१८ में काशी के पास मगहर में देह त्याग दी। ऐसी उनका मान्यता है की मृत्यु के बाद उनको सब को लेकर बहुत विवाद हो गया था हिंदू कहते थे कि अंतिम संस्कार हिंदू रीति से होना चाहिए और मुस्लिम कहते थे मुस्लिम रीति से, इसी विवाद के चलते जब उनके शव पर से चादर हट गई, तब लोगों ने वहाँ फूलों का ढेर पड़ा देखा। बाद में वहाँ से आधे फूल हिन्दुओं ने ले लिए और आधे मुसलमानों ने। मुसलमानों ने मुस्लिम रीति से और हिंदुओं ने हिंदू रीति से उन फूलों का अंतिम संस्कार किया। मगहर में कबीर की समाधि है। कबीर साहब सिकन्दर लोधी के समकालीन थे। कबीर साहब निरक्षर थे।' २१. इनके निम्न दोहे से स्पष्ट है–

मसि कागद छूयौ नहीं कलम गहयौ नहीं हाथ।''१

कबीर साहब निरक्षर होते हुए भी एक महान् दार्शनिक थे, इसी कारण ही आज संत कबीर को याद किया जाता है। वे सभी इंसान को एक ही परमेश्वर की सन्तान मानते हैं। हिन्दू–मुस्लिम की बढ़ती खाई को पाटने का काम संत कवि कबीरदास ने ही किया था।उन्होने धर्म के नाम पर होने वाले दंगों का पूरजोर खण्डन किया है। उन्होने परमेश्वर का निवास स्थान अपने मन में ही बताया है।

"कस्तूरी कुण्डली बसै, मृग ढूढें बन मांहि।
एसै घटि घटि राम है, दुनियां देखे मांहि।।"४

कबीर कहते हैं कि जैसे मृग अर्थात हिरण कस्तूरी की खुशबू को जंगल में ढूंढता फिरता है। जबकि कस्तूरी की वह सुगन्ध उसकी अपनी नाभि में व्याप्त है। परन्तु वह जान नहीं पाता। उसी प्रकार परमेश्वर कण–कण में व्याप्त है परन्तु मनुष्य उसे तीर्थों मे ढूढ़ता फिरता है।

साहित्य समीक्षा और अनुसंधान अंतराल

साहित्य समीक्षा करने पर पता चलता है कि कुछ शोधार्थियों ने कबीर की रचनाओं पर शोध किया है जैसे आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता, भारतीय काव्य शास्त्र कबीर का साहित्य, कबीर एक दार्शनिक कबीर काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन, कबीर के काव्य में विचार और कवितत्व, कबीर की काव्य भाषा, कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, संत कबीर आधुनिक सन्दर्भ, संत कबीर और उनकी की साधना, संत कबीर के काव्य में युग चेतना, परंतु "कबीर की काव्य रचनाओं में सत्य की महिमाः एक अध्ययन" इस विषय पर कोई शोध नहीं मिलता है अतः शोधार्थी के लिए इस विषय पर शोध करना बहुत उपयोगी होगा, अतः यह विषय शोध के लिए चुन लिया गया है अतः शोधार्थी के लिए इस विषय पर शोध करना बहुत उपयोगी है।

शोध–प्रकृति

शोध डिज़ाइन खोजपूर्ण होने के साथ–साथ वर्णनात्मक भी है, द्वितीयक डेटा या द्वितीयक जानकारी प्राचीन साहित्य, कबीर के प्राचीन साहित्य, शोध पत्रों, शोध पत्रिकाओं, पीएचडी थीसिस, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, वेबसाइटों और अन्य स्रोतों से एकत्र की जाएगी। शोधकार्य में कहीं तुलनात्मक, कहीं विश्लेषणात्मक या कहीं विमर्शात्मक या कहीं–कहीं अन्यान्य शोध–प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

शोध के उद्देश्य

कबीर की काव्य रचनाओं में सत्य की महिमाः एक अध्ययन

सत्य को महत्व

महापुरुष महात्मा बुद्ध जिनके वचनों का विश्व भर में अनुसरण किया जाता है, उन्होंने कहा था, "तीन चीजें ज्यादा देर तक नहीं छुप सकतीं, सूर्य, चंद्रमा और सत्य।" जिस प्रकार सूरज और चांद छुपाए नहीं जा सकते, क्योंकि उनका उदय होना निश्चित है, उसी तरह सच को छुपाने की चाहे कितना भी प्रयास क्यों न किया जाए, वह चमकते सूर्य और चंद्रमा की तरह उजागर हो ही जाता है। स्मरण रखें, सत्य प्रताड़ित हो सकता है, किंतु पराजित नहीं! कई लोग यह सब जानते हुए भी झूठ का रास्ता अख्तियार कर लेते हैं, चुन लेते हैं, क्योंकि आरंभ में उन्हें यह रास्ता सुगम दिखाई पड़ता है। लेकिन इस रास्ते पर चलने के बाद व्यक्ति इसमें पूरी तरह से उलझ कर रह जाता है। व्यक्ति एक झूठ को छुपाने के लिए सौ झूठ और बोलता हैं। इससे मनुष्य की मानसिक शांति भंग हो जाती है। झूठ की उम्र लंबी न होने के कारण एक न एक दिन झूठ उजागर हो ही जाता है। तब व्यक्ति कहीं का नहीं रहता। सत्य की ताकत से इतिहास में सभी महापुरुष भली–भांति अवगत थे। इसीलिए उन्होंने स्वयं तो जीवन पर्यंत सत्यव्रत का पालन किया ही, साथ ही मानव जाति को भी सदैव सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है। यही कारण है कि संसार की हर सभ्यता ने मानव को सत्यव्रत का पालन करने की शिक्षा दी है। सत्य के मार्ग पर चलना कठिन जरूर है, लेकिन यही मार्ग हमें जीवन के यथार्थ तक ले जाता है। इसीलिए हमारा यह कर्तव्य बनता है कि महापुरुषों की शिक्षा से प्रेरणा लेकर हम कठिन से कठिन परिस्थिति में भी सत्य का मार्ग ना छोड़े।

''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जिस हिरदे में साँच है, ता हिरदै हरि आप।।''६

प्रस्तुत रचना में कबीर साहब ने कहा है कि सत्य के बराबर इस संसार में कोई तप नहीं है और झूठ के बराबर कोई पाप नहीं है। कबीर ने झूठ का साथ देने वाले और सच न बोलने वाले व्यक्ति को सबसे बड़े पापी की संज्ञा दी है। कबीर साहब कहते हैं कि जिन व्यक्तियों के हृदय में सच्चाई होती है, उनके हृदय में स्वयं हरि का वास अर्थात परमेश्वर का वास होता है। प्रस्तुत रचना के माध्यम से कवि ने कहा है की सच्चाई का मार्ग ही शुभ मार्ग है, झूठ के मार्ग पर चलकर हमें कुछ भी हासिल नहीं हो सकता है। इस रचना में कवि ने सत्यवादी होने के लिए प्रेरित किया है। सत्य बोलना तपस्या करने के समान तथा झूठ बोलना पाप कर्म करने के समान है जिनके हृदय में सत्य होता है, उनके हृदय में ईश्वर रहते हैं।

साँच शाप न लागे, साँच काल न खाय।
साँचहि साँचा जो चले, ताको कहत न शाय।।"३

कबीर की इस काव्य रचना में सच्चाई अर्थात सत्य की ताकत के बारे में बताया गया है, सच्चाई से चलने वालों को तीनों लोकों में किसी का भी प्रकार का भय नहीं होता, सच्चाई से तो स्वयं यमराज भी भय मानते हैं, सच्चाई एक अथाह शक्ति है, यही यथार्थ है। सत्य बोलने वाले व्यक्ति को कोई श्राप नहीं लगता किसी की बद्दुआ का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता, सत्य को तो कॉल भी नहीं खा सकता है, अर्थात सत्य अमर एवं अजय है, सत्य कभी नहीं मरता, जो व्यक्ति सत्य के सांचे में ढल जाता है, जो मन कर्म एवं वचन से सत्य का साथ देता है उसका भला कौन विनाश कर सकता है। सत्य को दब पाने अथवा छुपा पाने की क्षमता संसार की किसी भी वस्तु में नहीं है। यह संदेश देने के लिए कबीर साहब ने इस दोहे की रचना की है।

इस दोहे से हमें यह शिक्षा भी मिलती है कि हमें समाज में कभी झूठ का साथ नहीं देना चाहिए, कबीर की यह रचना हमें प्रेरणा देती है कि झूठ की उम्र बहुत छोटी होती है यह जल्दी ही मर जाता है, जो जीवित रहता है वह केवल सत्य वचन ही है।

झूठे को झूठा मिले, दूंणा बढे स्नेह।
झूठे को साँचा मिले, तब ही टूटे नेह।।"१६

प्रस्तुत रचना में कबीर साहब यह संदेश देने का प्रयास करते हैं कि इस संसार में एक झूठ व्यक्ति को दूसरा झूठा व्यक्ति बड़ी आसानी से मिल जाता है अर्थात एक झूठा दूसरे झूठ को आसानी से ढूंढ लेता है खोज लेता है और दोनों में बड़ा असली होता है। दोनों झूठ व्यक्ति एक दूसरे की विचारधारा से पूर्णताएं सहमत होते हैं।किंतु वहीं दूसरी तरफ यदि झूठ व्यक्ति को कोई सच्चा अर्थात सत्य बोलने वाला व्यक्ति मिल जाता है तो दोनों का श्री प्रेम का बंधन टूट जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि झूठ का अनुसरण करने वाले लोगों में छल कपट हुए धोखा देने की आदत होती है किंतु सच्चे व्यक्ति को झूठे व्यक्ति की इन आदतों को पसंद नहीं करते तथा झूठ व्यक्तियों की विचारधारा का समर्थन नहीं करते। अतः सच्चे वह झूठ व्यक्तियों में कभी सहजता नहीं बन पाती।

कबीर साहब अपनी रचना के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि सच्चे व्यक्ति ने तो कभी झूठ बोलते हैं और ना ही झूठ बोलने वालों का साथ देते हैं। ऐसे व्यक्ति कभी अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करते।

साँचे कोई न पतीजई, झूठै जग पतियाय।
गली गली गोरस फिरे, मदिरा बैठि बिकाय।।"१५

प्रस्तुत रचना में कवि कबीर साहब कहते हैं, सच्ची बात पर कोई विश्वास नहीं करता, सत्य को मानने वाला कोई भी नहीं है, सब लोग झूठी बात पर इस संसार के लोग विश्वास करते हैं, सत्य वचन दो जैसे लोगों के कानों में चुभता है, परंतु झूठ सुनना उन्हें प्रिय लगता है।

प्रस्तुत दोहे में कवि ने बहुत ही गंभीर बात का जिक्र किया है। कबीर साहब कहते हैं दुनिया की रीत तो देखिए, गाय का दूध तथा दही जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है उसे बेचने वाला तो सुबह से शाम गली–गली तक घूमता है, किंतु मदिरा अर्थात शराब जो संपूर्ण दोषों से भरपूर है, और जो मनुष्य के स्वास्थ्य तथा चरित्र दोनों को पतन के कगार तक ले जाती है, बैठे–बैठे ही बिक जाती है। शराब के सौदागर को शराब बेचने के लिए गली–गली घूमना नहीं पड़ता। लोग बेच देते हैं दोपहर तक अपने झूठ का पूरा बाजार और एक बैठा रहता है शाम तक अपना सच लिए, दुनिया में झूठ आसानी से अपना स्थान बना लेता है परंतु सच को अपने अस्तित्व को बचाने के लिए लाख यत्न करने पड़ते हैं, सच को साबित करना पड़ता है और झूठ पर हर कोई यकीन करता है।

लेखा देणां सोहरा, जो दिल साँचा होय।
उस चंगे दीवान में, पला न पकड़ै कोय।।"६

कबीर साहब कहते हैं, अगर तेरा दिल सच्चा होगा, तो तेरे लिए लेखा देना अर्थात हिसाब देना आसान हो जाएगा। परमेश्वर के दरबार में जाने पर तुझे कोई मुश्किल परेशानी नहीं होगी, क्योंकि परेशानी तो उसे होगी जिसके हिसाब किताब में गड़बड़ी हो अर्थात जो झूठ फरेब का साथ देता हो। जब तू उस दीवान, खुदा अर्थात परमेश्वर के दरबार में पहुंचेगा तो वहां तेरा साथ देने वाला कोई नहीं होगा। अगर तेरा लेखा–जोखा, हिसाब

किताब साफ होगा, सच्चा होगा, तो तू परमेश्वर की नजर में दोषी ने होगा तू धर्मी भी ठहरेगा।
कबीर साहब अपनी इस रचना के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि हे मनुष्य अगर तू सच्चाई के रास्ते पर चलता है तो तेरे जीवन की सारी मुश्किलें आसान हो जाएगी, ईश्वर के दरबार में तुझे कोई उलझन नहीं होगी।

अध्ययन का निष्कर्ष

संसार की हर सभ्यता ने मानव को सत्य के मार्ग चलने की शिक्षा दी है। इस मार्ग पर चलना कठिन जरूर है, लेकिन यह मार्ग हमें जीवन के यथार्थ तक ले जाता है। कबीर साहब कहते हैं कि जिन व्यक्तियों के हृदय में सच्चाई होती है, उनके हृदय में स्वयं परमेश्वर का वास होता है। जो मन कर्म एवं वचन से सत्य का साथ देता है उसका भला कौन विनाश कर सकता है। इस संसार में एक झूठ व्यक्ति को दूसरा झूठा व्यक्ति बड़ी आसानी से मिल जाता है कबीर साहब अपनी इस रचना के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि हे मनुष्य अगर तू सच्चाई के रास्ते पर चलता है तो तेरे जीवन की सारी मुश्किलें आसान हो जाएगी, अगर तेरा लेखा–जोखा, हिसाब किताब साफ होगा, सच्चा होगा, तो तू परमेश्वर की नजर में दोषी ने होगा तुझे कोई उलझन नहीं होगी, और तू धर्मी भी ठहरेगा।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. डा. गोविन्द त्रिगुणायत, कबीर की विचारधारा – पृ ३१८
2. श्रीमती सविता श्रीवास्तव, शोध प्रबंध– संत औश्र सूफी साहित्य मे नैतिक तत्व
3. डा.प्रहलाद भौर्य, कबीर का सामाजिक दर्शन –पृष्ठ–१७
4. कबीर ग्रन्थावली – पृष्ठ– १०४
5. अवधेश प्रसार सिंह, युग दृष्ठा कवि कबीर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, पृ. ४०
6. आचार्य गृधमुनि नाम साहब, सदगुरू कबीर साने प्योनिधि, पृ. १८८
7. डा. केदार नाथ द्विवेदी, कबीर और कबीर पंथ, पृ. १५३
8. डा. राजेन्द्र प्रसाद, कबीर पंथ का उद्भव एंव प्रसार, पृ. ६२
9. श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, पृष्ट.११२
10. आचार्य रामचन्द्र शुकल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ट. ६५
11. श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
12. माता प्रसाद, कबीर ग्रन्थावली, पृष्ट ६५
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुकल पृष्ट ६५
14. शिव कुमार शर्मा, पृष्ट १४
15. बीजक पृष्ट ३८८
16. कबीरदास, कबीर बीजक
17. जयदेव सिंह, कबीर वाणी, पीयूष पृष्ट १३३
18. डॉ. पारसनाथ त्रिवारी, कबीर वाणी संग्रह
19. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुकल
20. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर पृष्ट ७७–७८
21. https://learnfromblogs.com/hi/ सच–बोलने–की–प्रेरणा–देते–प्रेरणादायक–दोहे